गुरु ही शिष्य जीवन के सूर्य

गुरु ही अपने प्रकाश से शिष्य के जीवन को आलोकित करते है और अपनी ऊर्जा से, उष्मा से उसके सारे दोषों का शमन करते है। यह है मकर संक्रान्ति का मूल रहस्य। मकर संक्रान्ति की पूर्व संध्या पर सद्गुरुदेव का यह दिव्य प्रवचन -

गुरु और ईश्वर के समक्ष एक ही भाव समर्पित कर सकते है और वह है समर्पण। निश्चित रूप से ईश्वर समस्त ब्रह्माण्ड का स्वामी है तो उसे सबसे अधिक प्रिय समर्पण भाव ही होता है।

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध भी प्रेम और समर्पण का सहयोग है। शिष्य समर्पण भाव से अपने मन की बात कहता है और गुरु उसे प्रेम का आशीर्वाद प्रदान करते है। इस समर्पण भाव के लिये गुरु प्रार्थना में गुरु गीता में विशेष वर्णन आया है। दो श्लोक विशेष है -

शरीरमिन्द्रियं प्राणमर्थस्वजनबान्धवान्। आत्मदारादिकं सर्वं सद्गुरुभ्यो निवेदयेत्।।
गुरुरेको जगत्सर्वं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम्। गुरोः परतरं नास्ति तस्मात्संपूजयेद्गुरुम्।।

शिष्य वही है जो अपने आपको पूर्ण रूप से गुरु को समर्पण कर दे, अपना शरीर, अपनी बुद्धि, तन-मन-धन इस भाव के साथ कि सबकुछ गुरु द्वारा प्रदान किया गया है।

सबसे बड़ा उच्चतम सम्बन्ध गुरु और शिष्य का सम्बन्ध है और गुरु कभी भी शिष्य को अकेला नहीं छोड़ते है।

कभी गुरु आगे आगे चलते है और शिष्य उनका अनुगामी होता है। कभी गुरु शिष्य का हाथ पकड़ कर साथ चलते है और जब गुरु जान जाते है कि मेरा शिष्य योग्य और समर्थ हो गया है तो वे उसे आगे कर देते है और उसके पीछे हो जाते है और कहते है कि प्रिय शिष्य अब तुम संसार सागर में अपनी शक्ति, अपनी बुद्धि और ज्ञान के साथ आगे बढ़ों।

इसीलिये गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहा गया है। एक रूप में संरचना करते है, एक रूप में पालन करते है और एक रुप में उसे स्वतंत्र करते है।

नवग्रह है प्रत्येक ग्रह अपनी-अपनी कक्षा में घूमता है और यह कक्षा अपनी धुरी में घुमने के साथ-साथ सूर्य की परिक्रमा भी होती है। तो इसका अर्थ क्या हुआ?

जगत की आत्मा है सूर्य।

किसी ने मुझसे पूछा कि
गुरुदेव ये सारे ग्रह तो लाखों-लाखों योजन पृथ्वी से दूर है, फिर हमारे ऊपर इनका क्या प्रभाव पड़ सकता है? हमें तो केवल सूर्य और चन्द्रमा ही दिखते है और पृथ्वी स्पष्ट दिखाई देती है उसे हम स्पर्श कर अनुभव करते है। फिर ग्रहों का कैसे प्रभाव पड़ सकता है?

मैंने कहा कि - तुम संसार में किससे देखते हो, उसने कहा आंखों से।

मैंने कहा आंखें सूर्य का स्वरूप है।

कितना ही प्रकाश हो पर यदि हमारे नेत्रों में ही ज्योति नहीं है तो हमें कुछ नहीं दिख सकता।

सूर्य का स्वरूप है, उष्मा, अग्नि। और तुम्हारे शरीर में भी ऊष्मा है अग्नि, यदि यह ऊष्मा और अग्नि शांत हो जाये तो क्या होगा?

इसलिये नेत्र, ऊष्मा और अग्नि जीवन का मूल तत्व है। हमारी सारी क्रियाएं अग्नि के द्वारा ही संचालित होती है। तो सूर्य तत्व नेत्रों के साथ-साथ हमारे प्रत्येक अंग में विद्यमान है।

ठीक इसी प्रकार चन्द्रमा शीतलता का प्रतीक है। यदि हर समय हमारा शरीर गर्म ही रहे तो क्या होगा? हम झुलस जायेंगे। तो चन्द्रमा हमारी शीतलता का स्वरूप है।

इसीलिये सूर्य और चन्द्र दोनों हमारे शरीर के दृश्यमान देव है। यदि भट्टी निरन्तर जलती रहेगी तो क्या होगा? सब कुछ भस्म हो जायेगा। तो सूर्य और चन्द्रमा दोनों आवश्यक है।

मंगल रक्त प्रवाह का स्वरूप, बुध है बुद्धि का स्वरूप, गुरु है ज्ञान का स्वरूप है, शुक्र है काम शक्ति का स्वरूप, शुक्र रज का स्वरूप जिससे नवीन रचना होती है और शनि है कर्म शक्ति संघर्ष और कर्म के न्यायधीश का स्वरूप। राहु है शौर्य का स्वरूप और केतु है मृत्युभय से मुक्ति का स्वरूप।

चलों आप आकाश मण्डल में स्थित इन ग्रहों की व्याख्या नहीं करो लेकिन हमारे प्रत्येक के शरीर में ये नवभाव, नवग्रह अवश्य स्थापित है और इन नवभाव से ही नवरस की रचना हुई है।

नौ रस से युक्त है हमारा शरीर, मन।

प्राण तो ईश्वर ने दिये है। प्राण अर्थात् आत्मा उसको संजाने, संवारने का स्वरूप है जीवन के ये नौ रस जिसे हमारे जीवन श्रेष्ठ रूप से गतिशील हो।

अभी मैंने दिल्ली शिविर में कहा था कि शिव हमें प्रत्येक दिवस उपहार के स्वरूप प्रदान करते है। प्रजेन्ट के रूप में आज के रूप में क्योंकि हम कालचक्र के अधीन है और कालचक्र में प्रत्येक क्षण नवीन होता है। जो आज है वह कल चला जाता है जा बन जाता है। आज का उल्टा है जा।

तो आपके पास है आज, शिव का उपहार समय है। अब इस उपहार का उपयोग आप किस प्रकार से करते है ये तो आप पर ही निर्भर करेगा। आपकी बुद्धि और आपके ज्ञान के ऊपर निर्भर करता है।

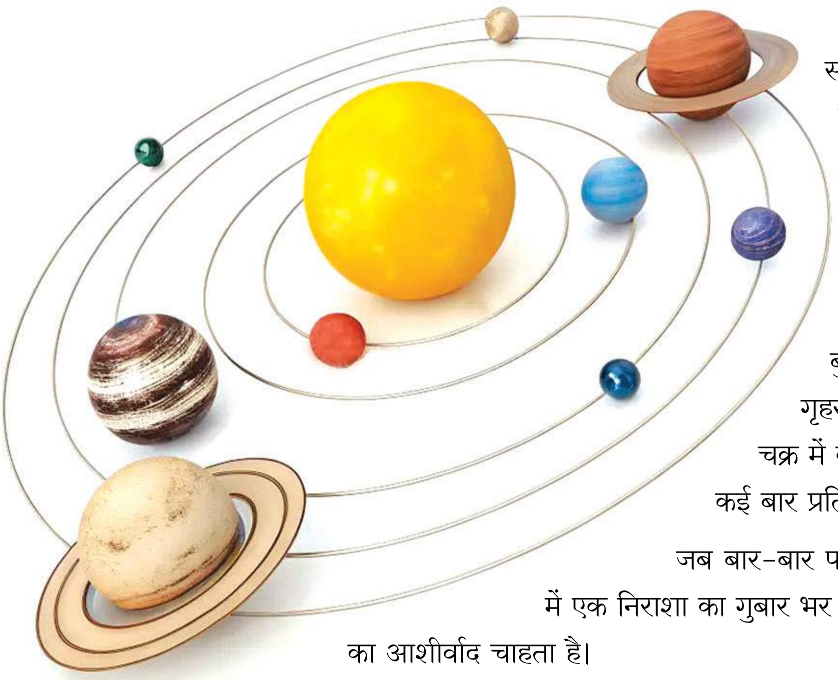

अब गुरु के पास क्यों आते हो? गुरु तो सीधी-सादी बात कहते है। आपको कहोंगे कि इसमें ज्ञान की क्या बात हुई। यह सब तो किताबों में भी लिखा हुआ है, पर गुरु के पास एक अलग प्रकार की क्रिया होती है।

मैं जानता हूं कि मेरा प्रत्येक साधक बुद्धिमान है, ज्ञानवान है। वह अपना भला बुरा अच्छी तरह से जानता है। वह अपनी गृहस्थी का पालन कर रहा है। अब इस जीवन चक्र में कई बार परिस्थितियां अनुकूल रहती है और कई बार प्रतिकूल रहती है।

जब बार-बार परिस्थितियां प्रतिकूल होती है तो उसके मन में एक निराशा का गुबार भर जाता है। उसे खाली करने के लिये वह गुरु का आशीर्वाद चाहता है।

जब वह खाली हो जाता है चिन्ता से भय से, तो फिर उसकी कर्मशक्ति पुनः चैतन्य हो जाती है। गुरु शिष्य मिलन का इतना ही सरल रहस्य है।

इसीलिये खाली करने की क्रिया को समर्पण भाव कहा गया है।

यह सौंप दिया सब भार तुम्हारे हाथों में।

सूर्य साधना का शिविर है और ज्योतिषी कहते है कि मकर राशि का स्वामी शनि है और मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य शनि के घर आता है।

शनि सूर्य से रुठा हुआ है क्योंकि वह सूर्य पुत्र है लेकिन उसे संसार में सम्मान नहीं मिला, सूर्य ने स्वीकार नहीं किया। कथा आप जानते है कि सूर्य का विवाह संज्ञा से हुआ था। संज्ञा सूर्य का तप नहीं झेल सकी तो उसने संध्या को भेज दिया उससे शनिदेव का जन्म हुआ और एक ओर संतान यम और यमी हुये।

पिता ने शनि को निकाल दिया। पुत्र कुपित हुआ।

अब पिता-पुत्र का झगड़ा होगा तो क्या स्थिति बनती है आप भी अपने-अपने घरों में सब जानते है।

अब पिता-पुत्र के इस झगड़े को शांत करने की जिम्मेदारी किसकी है? लोक व्यवहार में तो कहते है कि पुत्र जाकर पिता से क्षमा मांगे। पर यहां तो विचित्र स्थिति है, पुत्र की कोई गलती नहीं और पिता ने उसे निकाल दिया।

तो हमारे सूर्य है जगत के पिता। सूर्य है संसार की आत्मा और सूर्य के ऊपर सबकी जिम्मेदारी है।

ऐसा है जो वास्तव में सूर्य होता है सन होता है उसी को जिम्मेदारी निभानी होती है। आपका बेटा बनने के तो हर एक तैयार हो सकता है। पर SUN कोई नहीं बनता। आप किसी के पिता बनकर, सूर्य बनकर जिम्मेदारी निभाओं, इससे तो बड़ा भय लगता है।

तो सूर्य देव ने निर्णय लिया मैं पुत्र के घर आऊंगा।

अब पिता ही पुत्र के घर पहुंच जाये तो सारी बात समाप्त, गिले-शिकवे समाप्त, घर-परिवार में पुनः एकता। शनि देव ने प्रणाम किया तो सूर्य ने अपने गले लगाया।

शास्त्रों में यह वर्णन आता है कि सूर्य देव की पहली पत्नी से अश्विनी कुमार, यम, यमी हुए और संध्या से शनिदेव, सावर्णी मनु हुए।

अब अश्विनी कुमारों को देवताओं के वैद्य का पद मिला। यम को धर्मराज का पद मिला। तो सूर्य ने शनि के कहा कि मेरा पुत्र यह शनि संसार का न्यायधीश होगा।

अब इस कथा को हम आध्यात्मिक स्तर पर सोचते है। संसार के सारे रोगों का नाश सूर्य से ही होता है और अश्विनी कुमार के रूप में सूर्य संसार के प्राणियों को पुनः आरोग्य शक्ति प्रदान करता है।

धर्मराज जीवन के पश्चात् व्यक्ति को नवीन जीवन श्रृंखला में भेजते है।

शनि को मिला न्यायधीश का पद। तो सबसे बड़े हो गये शनि, क्योंकि न्यायधीश का कर्तव्य होता है कि वह उचित, अनुचित का निर्णय करें और मनुष्य को उसका कर्मफल प्रदान करें।

यह सारा जगत कर्म के अटूट सिद्धान्त पर ही चल रहा है। सब मनुष्य कर्म करते है। फिर कोई अच्छे फल प्राप्त करता है, कोई बुरे फल प्राप्त करता है। ऐसा क्यों?

सरल बात है, कर्मों का प्रभाव और इसीलिये शनि उसका निर्णय देते है। वे दूध का दूध, पानी का पानी कर दे है। पर एक बात है कोर्ट कहचरी में हर एक को डर लगता है। क्या मालूम न्यायधीश कैसा निर्णय दे दे।

अरे भाई! जब आप अपने कर्मों के प्रति निश्चित हो तो फिर डर कैसा? तब तो न्यायधीश आपको आपका हक अवश्य दिलायेंगा और उसके दिये गये निर्णय को कोई टाल नहीं सकता, सबको मानना पड़ेगा।

कहीं लिखा है कि मनुष्य गलतियों का पुतला है। तो आप मानों या नहीं मानों हम हमारे जीवन में कहीं न कहीं गलतियां अवश्य करते है।

हम कितना ही अपने आपको समझायें लेकिन अन्तर्मन जानता है कि मैंने यह कर्म श्रेष्ठ नहीं किया है। किसी का अधिकार लिया है। घर परिवार में सबके साथ न्याय नहीं किया है।

हर घर में कहते है कि माता-पिता बराबर न्याय करते है लेकिन यह देखने में आता है कि पिता का प्यार बड़े पुत्र की और विशेष होता है और माता का प्यार सबसे छोटे पुत्र की ओर विशेष होता है।

यह घर-घर की कहानी है।

अब जहां भी गलती होती है, वहां शनि की दृष्टि पड़ ही जाती है। शनि से कुछ छुप नहीं सकता है। गलतियां करें या नहीं करें शनि की दृष्टि में सबकुछ दिखता है, वह तो बहुत ऊंचे आसन पर बैठा है।

इसीलिये ज्यादातर लोगों को शनि से डर लगता है। निश्चित रूप से आपका यह प्रश्न आयेगा कि शनि की दृष्टि से कैसे बचा जाये।

मैं तो स्पष्ट रूप से कह रहा हूं शनि की दृष्टि से बचा नहीं जा सकता।

पर आपमें शौर्य है और सूर्य की कृपा है तो फिर आप अपनी गलतियें को सुधार देते है।

कर्मशक्ति जब शौर्य के साथ होती है तो वह आपके कर्म को बलवान बना देती है और आपके दोष समाप्त हो जाते है।

शनि में ही वह क्षमता है कि यह अति प्रदायक अर्थात् अति प्रदान करने वाला और अति विनाशक अर्थात् सब कुछ नष्ट कर देने वाला ग्रह है।

शनि मनुष्य को चारित्रिक बल प्रदान करते है जिससे मनुष्य जिम्मेदार, आत्मनियन्त्रण वाला, कठोर निर्णय लेने वाला और ठोस व्यक्तित्व बन जाता है।

शनि ही मनुष्य को बल और संतोष प्रदान करता है, क्योंकि यह बाधाओं पर विजय प्राप्त करने की शक्ति देता है।

पुराणों में कथा आती है कि राम का वनवास शनि की दशा में हुआ। द्रौपदी का चीर हरण शनि की दशा में हुआ, सीता का हरण शनि की दशा में हुआ।

एक बार शनि देवता की दृष्टि अयोध्या पर पड़ने वाली थी। राजा दशरथ को उनके ज्योतिषियों ने सूचित किया कि शनि कृतिका नक्षत्र के अन्त में जा पहुंचे हैं और जब शनि रोहिणी का भेदन करके आगे बढ़ेंगे उस समय अत्यन्त उग्र शाकट भेद नामक योग उत्पन्न होता है जो देवताओं तथा असुरों के लिए भी भयंकर है। चूंकि रोहिणी प्रजापति ब्रह्माजी का नक्षत्र हैं, उसका भेदन हो जाने पर प्रजा किस प्रकार रह सकती है?

ब्रह्मा एवं इन्द्र के लिए भी यह योग असाध्य है, फिर आप क्या करेंगे? इस घोर त्रासदी का निवारण कैसे करेंगे?

राजगुरु वसिष्ठ की बात सुनकर दशरथ गंभीर सोच विचार में पड़ गए। फिर उन्होंने अपने मन में महान साहस एकत्र करके दिव्यास्त्रों सहित दिव्य धनुष लेकर रथ पर आरुढ़ हो बड़े वेग से वे नक्षत्र मण्डल में गए। रोहिणी पृष्ठ सूर्य से सवा लाख योजन ऊपर है। वहां पहुंचकर राजा ने धनुष को कान तक खींचा और संहारास्त्र का संधान किया।

उस अस्त्र को देखकर शनि कुछ हंसते हुए बोले- हे राजन तुम्हारा महान पुरुषार्थ शत्रु को भय पहुंचाने वाला है। मेरी दृष्टि में आकर देवता, असुर, मनुष्य, नाग, किन्नर, गन्धर्व सभी भस्म हो जाते हैं। मगर तुम जीवित हो। तुम्हारे पुरुषार्थ से मैं सन्तुष्ट हूं। वर मांगों।

महाराज दशरथ कहते हैं, आप रोहिणी का भेदन कर आगे नहीं बढ़ें। इससे बारह वर्ष के लिए दुर्भिक्ष नहीं आ पाऐगा।

शनि देवता ने राजा दशरथ की बातों को ध्यानपूर्वक सुना और उनकी साहसिकता और निष्ठा से प्रसन्न होकर कहा,

राजा दशरथ, तुम्हारी प्रजा के प्रति तुम्हारी चिंता और तुम्हारा धर्म के प्रति समर्पण देखकर मैं तुम्हारी नगरी पर अपनी दृष्टि नहीं डालूंगा।

तो शौर्य है सूर्य का स्वरूप। क्या कहा था शनि ने राजा दशरथ को प्रजा के प्रति तुम्हारी चिन्ता और धर्म के प्रति समर्पण देखकर मैं तुम्हारी नगरी पर दृष्टि नहीं डालूंगा।

अब धर्म, गृहस्थ धर्म भी है। इस गृहस्थ धर्म को श्रेष्ठ रूप से कैसे निभाया जाये? यहां शौर्य काम नहीं आता। अब जो मैं बात कह रहा हूं, प्रत्येक गृहस्थी के लिये, पति-पत्नी के लिये आवश्यक है।

एक बार एक पत्नी ने अपने पति से आग्रह किया कि - आप मुझे मेरी छः कमियां बनायें जिन्हें सुधारने से वह श्रेष्ठ पत्नी बन जाये। अब पति बेचार हैरान रह गया। बड़ा असमन्जस, मन ही मन सोचा कि मैं इसे बड़ी आसनी से छः बातों की सूची दे सकता हूं जिनमें सुधार की जरूरत है। फिर मन ही मन सोचा कि ईश्वर जानता है कि मेरी पत्नी मुझे साठ बातों की सूची थमा सकती है जिसमें मुझे सुधार की आवश्यकता है।

पति ने ऐसा नहीं किया और कहा कि मुझे थोड़ा सोचने का समय दो। दूसरे दिन ऑफिस गया, रास्ते में फूल वाले का बोला छः गुलाब का गुच्छा बनाओं और उसके साथ एक चिट्ठी डाली। उसमें क्या लिखा -

मुझे तुम्हारी छः कमियां तो नहीं मालूम जिसमें सुधार की जरूरत है,

तुम जैसी भी हो मुझे बहुत अच्छी लगती हो।

शाम को पतिदेव घर आये, पत्नी द्वार पर इंतजार कर रही थी। आंखों में प्रेम के अश्रु थे और कहने की आवश्यकता नहीं है कि उनके जीवन में मिठास और अधिक बढ़ गई।

पति भी इस बात पर खुश हुआ कि उसने बार-बार आग्रह के बावजूद पति को छः कमियों की सूची नहीं दी।

इसलिये यथा संभव जीवन में सराहना करने में कंजूसी न करें और आलोचना से बचकर रहना ही समझदारी है।

जिन्दगी का यह हुनर भी आजमाना चाहिये
जंग अगर अपनों से हो तो हार जाना चाहिये।

पसीना उम्र भर का उसकी गोद में सूख जायेगा।
हम सफर क्या चीज है, ये बुढ़ापे में समझ आयेगा।।

हमारे सूर्यदेव ने भी अभिमान नहीं किया। हर साल चले जाते है, शनि के घर। उसको शांत करने के लिये, उसको मनाने के लिये।

शनि की तो पूजा करो, वह तो आपके पूरे शरीर में व्याप्त है क्योंकि वही कर्मफल देता है। हमारे कर्मों का फल। पर फल के साथ बाधा यह है कि जब तक मिलता नहीं है हम सब उसे पाने के लिये व्याकुल रहते है और जब मिलने का समय आता है तो उस समय चिन्ता घेर लेती है। कितनी भी मेहनत करें रिजल्ट का टाईम आता है तो हर विद्यार्थी को चिन्ता होती है।

बहुत परिश्रम किया, प्रमोशन की लिस्ट डिक्लेयर होने वाली होती है तो चिन्ता आती है। बहुत सामान बेचा पेमेन्ट जब आने वाला होता है तो चिन्ता हो ही जाती है कि पूरा आयेगा या नहीं आयेगा।

इसीलिये सामान्य लोग कर्मफल सहजता से स्वीकार नहीं करते। शनि हमारे ज्ञात-अज्ञात कर्म, मानसिक शारीरिक कर्म सब देख लेते है।

हर व्यक्ति कोई न कोई मुखौटा लगाये रखता है और सूर्य पुत्र शनि तो उस मुखौटे के भीतर भी देख लेते है। क्योंकि कर्म तो प्रतिपल घटित हो रहा है। दिनभर में अनगिनत कर्म फलीभूत हो रहे है।

चलो, विचार करो कि ऑफिस में आपने दिनभर काम किया। छुट्टी का समय आया, आपके अधिकारी ने कहा कि यह काम और है इसे आज ही पूरा करना है और आप कहोंगे, जी.. जी...। आप ऑफिस में दस बजे तक रुककर काम पूरा कर देंगे। ऊपर से हंसते रहोगे लेकिन मन ही मन सौ गालियां निकाल दोंगे।

देखों भाई आपने काम भी पूरा किया और मानसिक रूप से 100 अपशब्द भी कह दिये। अब क्या बात हुई, अधिकारी ने आपका काम देखा और शाबासी दी।

शनि ने आपके मन में आये उन अपशब्दों को भी सुन लिया, जो आपने मन ही मन बोलें थे।

सब देख रहे शनि - इतनी चिन्ता करने की आवश्कतया नहीं है शनि की।

हम है सूर्यवंशी, सूर्य के साधक और सूर्यदेव है हमारे मित्र दोनों की आपके कर्मों का लेखा-जोश रखते है अन्तर है। शानि न्यायधीश रूप में देखते है, सूर्य मित्र रूप में आपके दोषों को देखकर उसे शनि की दृष्टि से बचाते है।

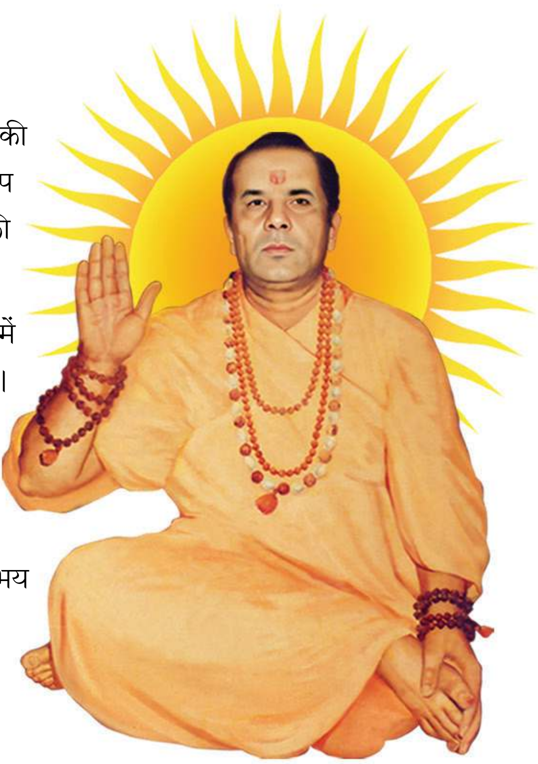

इसीलिये गुरु की उपमा सूर्य से की गई है। गुरु हमारे जीवन में सूर्य रूप में आते है। वे लेखा-जोखा नहीं करते, सीधे देखते हे। अपने पुत्र शनि को भी कहते है कि ये मेरी प्रजा है इस पर दयालु रहो। कहते है कि सूर्य की गर्मी न्याय को भी मुलायम बना देती है। इसीलिये सूर्य साधना से शनि दोष की भी निवृत्ति हो जाती है।

सूर्य का मार्ग तो सीधा है।, किरणें सीधी है। फिर जीवन में भय चिन्ता परेशानी नहीं रहती है। जब शक्ति का विकास हो जाता है।

सूर्य हमें सम्मोहन शक्ति प्रदान करता है, कर्म शक्ति प्रदान करते हैं

तो सबसे महान् क्या हुआ कर्म ओर कर्म हाथ-पैर, बुद्धि और ज्ञान के सहयोग से सम्पन्न होता है। एकाग्रता का भाव होना चाहिये।

मुझसे किसी साधक ने एक बार पूछा कि गुरुजी मेरा शरीर ठीक नहीं रहता है। कोई न कोई व्याधि लगी ही रहती है। चलो एक छोटी सी कहानी सुनों, तुम खुद ही निर्णय कर लेना।

एक शहर में एक सेठजी रहते थे, बड़ा व्यापार, बड़ा घर, नौकर चाकर, भरा पूरा परिवार सब तरह के सुख था बस ही दुःख था।

रात को नींद नहीं आती थी और थोड़ी देर आंख लग जाती भयंकर सपने आते। बहुत बैचेनी रहती, बहुत ईलाज कराया लेकिन रोग घटने की बजाय, बढ़ता ही जा रहा था।

एक दिन नगर में एक संत आये बड़े ही ज्ञानी, लोगों का दुःख दर्द दूर करते।

सेठ जी को पता लगा वे भी गये और अपनी विपदा कह सुनाई और बोलें कि महाराज जी जैसे भी हो मेरा कष्ट दूर कर दीजिये।

संत ने उन्हें देखा और कहा कि - आपके रोग का एक ही कारण है आप अपंग हो। सेठ जी का बड़ा आश्चर्य हुआ कि मैं अपंग कैसे मेरे शरीर में स्वस्थ हाथ-पैर है।

संत ने हंसते हुए कहा कि - **अपंग वह नहीं होता जिसके हाथ-पैर नहीं होते। वास्तव में अनंग तो वह होता है जो हाथ-पैर होते हुए भी उनका इस्तमाल नहीं करता।**

संत ने पूछा - बताओं आप शरीर से कितना काम करते हो? सेठ जी विचार में पड़ गये। वे क्या जवाब देते, वे तो हर छोटे-बड़े काम के लिये नौकरों पर ही निर्भर रहते।

संत ने कहा कि यदि आप अपने रोग से बचना चाहते हो तो स्वयं अपने हाथ-पैर से इतनी मेहनत करों कि थक कर चूर हो जाओं। एक सप्ताह में तुम्हारी बीमारी चली जायेगी।

वही हुआ, एक सप्ताह वह अपने सारे काम खुद करने लग गया। बहुत गहरी नींद आई, बहुत विश्राम मिला, शरीर और मन तरोताजा हो गया।

मैं आपको भी यही कहता हूं कि तन के आरोग्य से मन को आरोग्य मिलता है और जब मन आरोग्यवान नहीं होता है तो रात को दिन नहीं आती है।

मैं आपको कह रहा हूं यदि आपको भी अपने कार्यो में सफलता नहीं मिल रही है, तो एक बार दिल लगाकर मेहनत करो।

देखों भाई! जो किस्मत में नहीं लिखा है वह मेहनत से मिल जाता है।

कठिन परिश्रम, कर्म वह कीमत है जो हमें सफलता के लिय चुकानी पड़ती है। यदि आप परिश्रम रूपी कर्म कर्मरूपी कीमत चुकाने के लिये तैयार है तो अपने जीवन में सफलता अवश्य प्राप्त करेंगे।

मनुष्य स्वयं अपने कर्मों का लेखा-जोखा नहीं कर सकता है। वह तो सदैव सोचता है कि जो मैं कर रहा हूं वह ठीक है। फिर समझाता है कि अपने परिवार की उन्नति के लिये कर रहा हूं। छल-कपट भी करता है **लेकिन एक बात याद रखिये छल-कपट से आपके कर्म शुद्ध नहीं हो सकते है। शुद्ध कर्म से ही शुभ फल प्राप्त होता है।**

स्कन्द पुराण में एक बहुत सुन्दर कथा आती है -

काशी नरेश की कन्या कलावती के के साथ मथुरा के राजा दाशर्ह के साथ हुआ। बड़ी धूमधाम से विवाह हुआ। विवाह के बाद राजा ने अपनी पत्नी को अपने साथ बुलाया पर पत्नी ने इंकार कर दिया। राजा ने बल प्रयोग की धमकी दी।

कलावती बड़ी विद्वान थी, उसने कहा आप मेरे पति है, यदि हमें अच्छे से गृहस्थ धर्म निभाना है तो बल प्रयोग नहीं स्नेह प्रयोग होना चाहिये। स्नेह से ही गृहस्थ जीवन में अभिवृद्धि होती है। यह सुनकर राजा को क्रोध भी आया और बात अनसुनी कर पत्नी के पास गया।

और जैसे ही पत्नी को स्पर्श किया, उसके शरीर में एक विद्युत करंट जैसा लगा, राजा का अंग-अंग जलने लगा। एकदम घबराकर दूर हटा और बोला आप तो इनती सुन्दर कोमल है फिर आपका स्पर्श करते ही मुझे इतनी जलन क्यों होने लगी।

पत्नी ने कहा मैंने बाल्यकाल में दुर्वासा ऋषि से शिव मंत्र लिया और वह मंत्र जप करने से मेरी सात्विक ऊर्जा का विकास हुआ। आपने अब तक भोग ही भोग किये है, राजन् जिस प्रकार अंधेरी रात और दोपहर एक साथ नहीं रह सकते। वैसे आपका अन्तर्मन कलुषित है और मेरा अन्तर्मन बिल्कुल विशुद्ध है। साथ होना असंभव है।

आपके कर्मों के कारण आपके शरीर में, मन में बुद्धि में दोषों का भण्डार है। और मैंने जो साधना, तपस्या और मंत्र जप किया है उस कारण मेरे शरीर में ओज, तेज, आध्यात्मिक कर्म अधिक है। इसलिये मैं आपके निकट नहीं आ सकती। आपसे दूर रहकर ही प्रार्थना करती हूं।

आप बुद्धिमान है, बलवान है, तेजस्वी है, धर्म की बात भी आपने सुन रखी है फिर भी आपमें विषय वासना के भोग अधिक है।

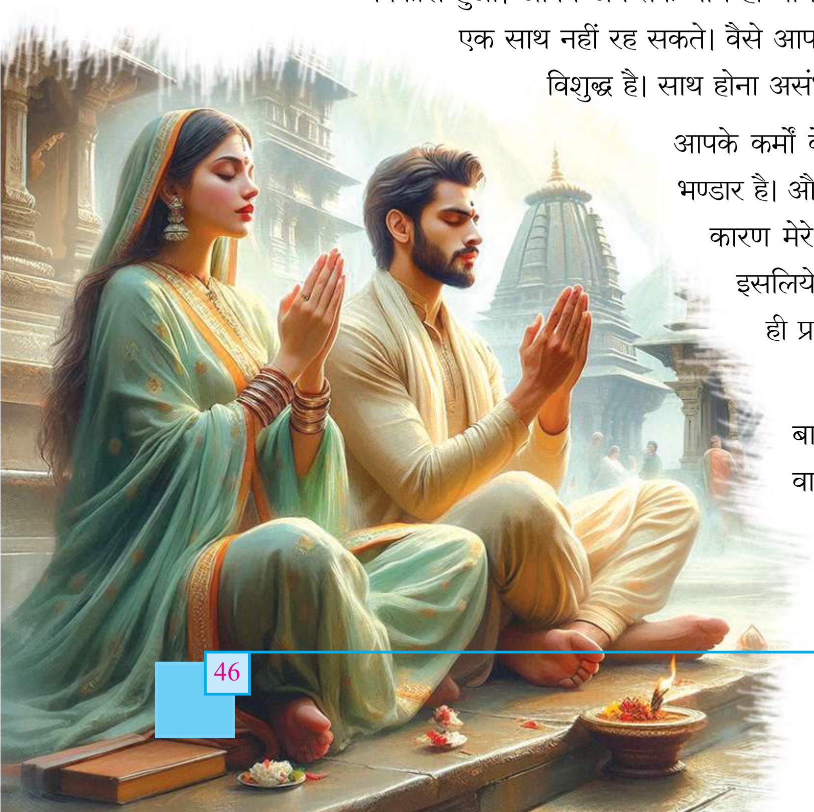

राजा के बड़ा आश्चर्य हुआ कि आपको यह कैसे मालूम पड़ा।

स्त्री ने बड़े भोलेपन में कहा कि - जब हृदय शुद्ध होता है तो दूसरों के मन की तरंगें स्पष्ट सुनाई दे जाती है।

अब राजा ने कहा कि मुझे भी भगवान शिव का यह मंत्र दे दो। मेरा सौभाग्य है कि मुझे आप जैसी ज्ञानी पत्नी प्राप्त हुई है।

रानी ने कहा कि आप मेरे पति है, मैं आपकी गुरु नहीं बन सकती है। उचित रहेगा कि हम दोनों गर्गाचार्य महाराज के पास चलते है।

दोनों यमुना तट पर गर्गाचार्य जी के पास गये और गुरु आज्ञा से, स्नान आदि से निवृत होकर गुरु शिव स्वरूप में ध्यान में बैठे और अपने दिव्य नेत्रों से शांभवी दीक्षा द्वारा राजा पर शक्तिपात किया।

आगे कथा आती है कि देखते ही देखते राजा के शरीर से कई कौऐं निकलने लगे, काले कौऐं अर्थात् छोटे-छोटे परमाणु। अशुभ कर्मों के तुच्छ परमाणु करोड़ों की संख्या में सूक्ष्म दृष्टि से गुरु द्वारा ही देखे जाते हे। इसे कहते है शमन क्रिया।

गुरु चरणों में, संत चरणों में बैठकर साधक को लाभ ही लाभ प्राप्त होता है। उसकी मंद बुद्धि पर पड़े कुसंस्कार समाप्त होते है। आत्मभाव प्राप्त होता है और व्यक्तिगत जीवन में भी शांति और समाजिक जीवन में सम्मान मिलता हैं।

देखों शुभ-अशुभ, पूर्व जन्मों के संस्कारों का प्रभाव, हमारे भीतर उथल-पूछल मचाता हे। हमारा शरीर पाप और पुण्य का मिश्रण है। हमारा अन्तःकरण शुभ और अशुभ मिश्रिण हैं जब हम अन्तःकरण में शुभ नहीं होते तो अशुभ परमाणु बढ़ जाते है।

जीवन में कर्म क्या है? पुरुषार्थ क्या है? यह है कि हमारे जीवन में अशुभ क्षीण हो जाये तथा शुभ भाव उच्चता की और बढ़े।

जीवन में ज्ञान का सूर्य सदैव और सदैव प्रकाशवान हो। जहां ज्ञान है वहां श्रेष्ठ गति है जहां श्रेष्ठ गति है वहा शुभता है, श्री है, समृद्धि है, शांति और संतोष है।

आप अपने जीवन में पूर्ण आरोग्य के साथ भौतिक, आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त करें।

बहुत-बहुत आशीर्वाद...

परम पूज्य गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

(मकर संक्रान्ति महोत्सव, सम्बलपुर - 2025)